अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका माह नवम्बर 2025 वर्ष 6 अंक 3

चहलपहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

स्नेह का नीड़	विभा कनन	4
जुनियर भीम की...	विज्ञान भूषण	6
गुरू की सीख	रामगोपाल व्यास	10
समय का मूल्य	वीरेन्द्र बहादूर	13
समझ का आ...	आरती आस्था	22
तितलियां	पूनम पांडे	24

कविताएं

सुन्दर अपना देश	डॉ. कविता विकास	09
नटखट चंदू	वंसत जमशेदपुरी	09
बाल दिवस	वरूण देव	12
ठंडी की मौसम	अर्जुनसिंह	12

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
नवम्बर 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ अंकित चित्र
दीक्षा चौधरी द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

हमें महापुरूषों की जीवनियां पढनी चाहिए

प्यारे बच्चों

दीपावली का खूब जमकर आनन्द ले लिया। आतिशबाजी एवं खान-पान के भी मजे लिए होगें। लेने भी चाहिए। त्यौंहार होते ही इसलिए है। जब हम अपनी दैनिक दिनचर्या से कुछ इतर कार्य कर सकें। त्यौंहार हमें नवीन ऊर्जा देते है तथा पुनः कार्य में जुटने हेतु प्रेरित करते है। तो अब आप नवम्बर माह की चहल-पहल पढ़ रहे है। नवम्बर माह बच्चों पर केन्द्रित रहता है। हमारे सबके प्रिय चाचा नेहरू का जन्मदिन आता है।

बच्चों जवाहर लाल नेहरू हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने थे। इनका जीवन बहुत सादगी एवं प्रेरणादायी रहा। इनका मानना था कि बच्चें ही देश की भावी पीढ़ि है जोकि सशक्त देश एवं समाज का चला सकते है। इसलिए यह बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। प्रधानमंत्री होने के बाद भी बच्चों से मिलना उनसे बातें करना इनको बहुत पसन्द था। इसलिए सभी बच्चें इनको चाचा नेहरू के नाम से जानते है।

बच्चों वर्तमान समय में बचपन तो समाप्त हो रहा है। गली-मौहल्लें के खेल लगभग बंद हो गए है। आपस में बैठकर बतियाना, चंचलाहट भरी शैतानियां सभी बंद हो गई। बच्चें भी मोबाईल में रील्स या अन्य विडियों देखकर अपने आपको आयु से पहले ही बड़ा मानने लग गए है। दूसरी ओर शिक्षा प्रणाली ने भी कुछ कम कसर नहीं छोड़ी। शिक्षा में रचनात्मकता कम हो रही है तथा रटतविद्या हावी हो रही है। केवल अंक प्राप्ति की होड़ चंहुओर मची हुई है। इससे समाज में सशक्त किशोर एवं युवा तैयार नहीं हो रहे है। उनके सामने रोजगार जैसी विकराल समस्याएं हमेशा फन फैलाएं खड़ी रहती है।

अभिभावकों को चाहिए कि वह बच्चों में शिक्षा के साथ-साथ रूचि अनुसार कुछ गतिविधियां करवावें, इससे बच्चें का मानसिक स्तर बढेगा। उसको सोचने के अवसर मिलेंगे। वह अपने भविष्य हेतु कुछ राह बना पायेगा। वर्तमान समय में यह बहुत जरूरी है कि हम मोबाइल का सुरक्षित उपयोग करते हुए किस प्रकार अपने अच्छे भविष्य हेतु प्रयास करें तथा अपनी जड़ों को मजबूत करते हुए एक सशक्त वटवृक्ष बने।

संजय श्रीमाली

स्नेह का नीड़

विभा कनन

गाँव के एक शांत कोने में रेखा अपनी बेटी पूनम के साथ रहती थी। पति का देहांत कई वर्ष पहले हो चुका था। रेखा के पास धन नहीं था, लेकिन हिम्मत और ममता की कोई कमी नहीं थी। उसका एक ही सपना था। "मैं अपनी बेटी के लिए ऐसा नीड़ बनाऊँ, जहाँ उसे स्नेह और आत्मविश्वास दोनों मिलें।"

पूनम जन्म से ही थोड़ी अलग थी। उसके दाएँ पैर में हल्की कमजोरी थी, जिससे वह दौड़ नहीं पाती थी। वह चल सकती थी, पर धीरे–धीरे। पूनम स्कूल तो जाना चाहती थी परंतु स्कूल दूर था और उसको अपनी कमजोरी के कारण झिझक भी थी। एक दिन पूनम पास लगे नीम के पेड़ पर जल चढ़ाकर धीरे–धीरे घर वापस जा रही थी तब गांव के कुछ बच्चों ने उसका मज़ाक उड़ाया था। "देखो, लंगड़ी पूनम आ रही है!"

चित्र : निहारिका

वह बात उसके दिल में गहराई तक उतर गई थी। तब से पूनम ने घर से बाहर जाना लगभग छोड़ दिया था। वह माँ की दुकान पर मदद करती, फूलों को पानी देती, पर अपनी उम्र के बच्चों के बीच जाने में भी झिझकती थी। रेखा यह सब समझती थी। वह जानती थी कि पूनम के दिल में दर्द है, पर उसकी आँखों में अब भी उम्मीद की चमक है। एक शाम उसने बेटी से कहा, "बेटी, दुनिया हँसती है तो हँसने दे अगर तेरे दिल में आत्मविश्वास, सच्चाई और हिम्मत है तो एक दिन वही दुनिया ताली भी बजाएगी।" पूनम ने हल्की मुस्कान दी, पर उसके मन की झिझक अब भी थी। एक दिन कुछ बच्चे खेलते–खेलते रेखा के आँगन में आ गए। पूनम वहाँ फूलों को पानी दे रही थी। एक लड़की ने मुस्कुराकर कहा, "दीदी क्या हम यहाँ खेल सकते हैं ?" पूनम पहले थोड़ा झिझकी, फिर बोली, "हाँ... क्यों नहीं ?" यह उसका पहला "हाँ" था, जो डर से नहीं, अपनेपन से निकला था।

रेखा ने अपनी बेटी को पहली बार बिना झिझके बोलते देखा। अगले दिन रेखा ने अपने घर के आँगन को और सुंदर बना दिया। उसने एक कोने में पुरानी किताबें, कुछ खिलौने, मिट्टी के रंगीन फूलों वाले गमले और बैठने के लिए छोटी चारपाइयाँ रखीं। रेखा के आंगन में हर रोज़ बच्चे आ जाते, सब साथ खेलते, हंसते–मुस्कुराते, पढ़ते और कहानियां सुनाते

धीरे–धीरे वह जगह गाँव के बच्चों की पसंदीदा जगह बन गई। पूनम अब उतनी चुप नहीं रहती थी। वह कभी फूल तोड़कर सबको देती, कभी कहानी सुनाती, और कभी बच्चों के खेल में भाग लेती। वह स्कूल तो नहीं जा पाती लेकिन सभी बच्चे उसे घर पर ही पढ़ना–लिखना सिखाते, चित्र बनाना और उनमें रंग भरना सिखाते।

एक दिन बच्चों ने कहा, "पूनम दीदी, आज आप कहानी सुनाएँ!" वह पहले हँसी, फिर बोली, "अगर तुम वादा करो कि हँसोगे नहीं, तो मैं कहानी सुनाऊंगी" सबने एक साथ कहा, "वादा!" पूनम ने अपनी प्यारी आवाज़ में कहानी सुनानी शुरू की। कहानी खत्म होते ही सबने ताली बजाई।

रेखा की आँखों से आँसू निकल पड़े, ये खुशी के आँसू थे। अब पूनम बदल चुकी थी। वह डरती नहीं थी। वह बोलती थी, मुस्कुराती थी और सबको अपने साथ जोड़ती थी। रेखा ने महसूस किया कि उसका छोटा–सा घर अब सिर्फ उसका नहीं रहा, वह तो स्नेह का नीड़ बन गया है। एक शाम पूनम माँ के पास आई और बोली, "माँ, अब मुझे डर नहीं लगता और मैं सबके साथ रह सकती हूँ, उनसे बात कर सकती हूं।"

रेखा ने उसे गले लगाते हुए कहा, "बेटी, स्नेह और हिम्मत से बना नीड़ डर को पिघला देता है। जब दिल में प्यार होता है, तो पंख अपने आप मज़बूत हो जाते हैं।" बरगद के पेड़ की डालियों पर पक्षियों की चहक गूँज रही थी। आँगन में बच्चों की हँसी थी, किताबों की सरसराहट थी, और रेखा के चेहरे पर संतोष की चमक थी। उसने आसमान की ओर देखा, वहाँ कुछ पक्षी तिनके लेकर उड़ रहे थे। वे अपने नीड़ बना रहे थे। रेखा मुस्कुराई और बोली, "देखो पूनम, वे भी अपना नीड़ स्नेह से बुन रहे हैं। हमारा नीड़ भी ऐसा ही है, जहाँ प्यार हो, अपनापन हो और विश्वास हो।" पूनम ने आसमान की ओर देखते हुए कहा, "हाँ माँ, अब मुझे भी लगता है कि मैं उड़ सकती हूँ।" और उस शाम, बरगद के नीचे बैठी माँ–बेटी ने महसूस किया– स्नेह ही सबसे सुंदर नीड़ है, जो दिलों में बसता है, पंखों को मजबूत बनाता है और फिर हमें उड़ना सिखाता है।

पता – नं 26 कृष्ण राघवन नगर बोडिपलायम,
मदुकरई कोयम्बतूर, तमिलनाडु

जूनियर भीम की गदा

विज्ञान भूषण

नीशू अभी छ साल का है। वह अपने पापा, मम्मी और पंखुड़ी दीदी के साथ दिल्ली में रहता है। वैसे तो नीशू बहुत प्यारा बच्चा है। वह अपनी क्लास के सारे बच्चों से होशियार भी है। लेकिन नीशू बहुत पतला–दुबला दिखता है। असल में उसे घर के न्यूट्रिशस खाने के बजाय बाजारू खाना ज्यादा पसंद आता है। इसी वजह से घर में पापा की, मम्मी की, पंखुड़ी दीदी की और स्कूल में टीचर से डांट उसे पड़ती रहती है। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा है, जो उसे बिल्कुल नहीं डांटता है। केवल प्यार करता है। नीशू की सारी बातें और शिकायतें सुनता है। इसीलिए नीशू उनको अपना बेस्ट फ्रेंड मानता है। और नीशू के बेस्ट फ्रेंड हैं उसके नानू यानी नानाजी। लेकिन वे नीशू के साथ दिल्ली में नहीं, कानपुर में रहते हैं। इसीलिए अपने दिन भर की सारी बातें नीशू रोज शाम को फोन पर नानू को बताता है।

अभी दो तीन पहले ही अपने नानू से फोन पर बात करते हुए शिकायत कर रहा था, 'अरे यार नानू, आप तो मेरी मम्मी के डैडी हो न!' 'हां यार हैं तो..' नानू ने कहा। 'तो फिर मम्मा को जरा समझाते क्यों नहीं कि मुझे खाने के लिए डांटा न करें। उनसे कहिए नीशू अभी छोटा है, बड़ा होगा तो समझ जाएगा, शैतानी नहीं करेगा।'

'अच्छा ठीक है तुम्हारी मम्मी को समझाएंगे।' नानू ने नीशू को भरोसा दिलाते हुए कहा। लेकिन नीशू के शिकायतों की पोटली अभी बंद नहीं हुई थी। वह बोला, 'पता है नानू अभी कुछ देर पहले मम्मा ने मुझे गेस्ट्स के सामने डांट दिया था।' 'अच्छा क्यों यार, क्यों डांट दिया मम्मा ने?' नानू ने जानना चाहा।

नीशू बोला, 'अरे मम्मी की कुछ फ्रेंड्स आई थीं। मैं भी गेस्ट रूम में ही अपने हैंगिंग हॉर्स पर बैठकर ग्लास में कोल्ड ड्रिंक पी रहा था कि मेरा हॉर्स

थोड़ा तेज हैंग कर गया और ग्लास का सारा कोल्ड ड्रिंक फैल गया। इसी बात पर मम्मा ने डांट दिया। बताओ नानू मेरी कोई इज्जत ही नहीं है घर में। आपको छोड़कर सब मुझे डांटते रहते हैं।' नानू ने कहा, 'हां यार ये तो गलत है।' कुछ सेकेंड बाद नीशू को कुछ याद आया। वह बोला, 'नानू अगले महीने मेरे स्कूल में फैंसी ड्रेस कॉम्पिटिशन होने वाला है। मैं उसमें जूनियर भीम बनना चाहता हूं। लेकिन उसके लिए मुझे यहां अच्छी गदा नहीं मिल रही है। कुछ दिनों बाद मैं आपके पास आने वाला हूं तो प्लीज मेरे लिए एक अच्छी सी गदा लेकर रख लेना नानू।'

चित्र : सुधांशु साध

नानू ने कहा, 'गदा तो मैं लेकर रख लूंगा लेकिन उसे लेकर तुम जूनियर भीम तो बिल्कुल नहीं दिखोगे।' 'ऐसा क्यों ?' नीशू ने पूछा। 'वो इसलिए क्योंकि भीम की बॉडी बहुत स्ट्रॉन्ग थी। उनके पास बहुत ताकत थी। इसीलिए गदा उठाकर वे बहुत अच्छे दिखते थे। लेकिन तुम तो बहुत पतले–दुबले हो। गदा लेकर कैसे दिखोगे?' नानू ने नीशू से सारी बात कह डाली।

उनकी बात सुनकर नीशू कुछ सोचते हुए बोला, 'पर मेरी मसल्स तो बनती ही नहीं, मैं क्या करूं?' नानू ने कहा, 'तुम्हारी मसल्स इसलिए नहीं बनती क्योंकि तुम न्यूट्रिशस चीजें खाते ही नहीं। तुम्हारी मम्मी बताती हैं कि ना तुम डेली दूध पीते हो। ना पनीर खाते हो, ना कोई फ्रूट तुमको पसंद है और ना ही ड्राय फ्रूट्स। तुमको तो पिज्जा, पास्ता, नूडल्स खाने में मजा आती है, क्यों हैं न!'

नीशू ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा, 'हां ये तो है नानू। पर क्या करूं ये सब मुझे बहुत टेस्टी लगते हैं।' 'तो ठीक है यही सब खाओ लेकिन फिर जूनियर भीम बनने की प्लानिंग छोड़ दो।' नानू ने नीशू से कहा। यह सुनकर नीशू मायूस हो गया बोला, 'नहीं नानू नहीं, मुझे तो जूनियर भीम बनना है। आपसे गदा लेने भी मैं आऊंगा। आप बताओ मैं क्या ऐसा करूं कि मुझे खूब सारी ताकत आ जाए। मेरी मसल्स बन जाएं?'

नानू ने समझाया, 'उसके लिए रोज फ्रूट्स खाने होंगे, दूध पीना होगा, ड्राय फ्रूट्स खाने होंगे। पिज्जा, बर्गर, मोमोज के बजाय मम्मी घर में जो खाना बनाएं उसे खाना होगा। बोलो रेडी हो ?' नीशू तुरंत बोला, 'बिल्कुल रेडी नानू, प्रॉमिस अब ऐसा ही करूंगा। लेकिन मुझे जूनियर

भीम बनना ही है। आप मेरे लिए एक अच्छी सी गदा लेकर मुझे कल दिखाना।' अगले दिन शाम को नीशू की मम्मी उसके नानू को फोन पर बता रही थीं, 'पापा आज तो कमाल ही हो गया, नीशू ने खुद ही दूध मांगकर पिया। एक केला और कुछ अंगूर खाए। यही नहीं अपने टिफिन में मुझसे मांगकर ड्राय फ्रूट्स भी ले गया था। ऐसा क्या समझा दिया कल आपने इसे?' नानाजी केवल मुस्कुरा दिए। तभी नीशू वहां आया और मम्मा से बोला, 'आप नानू से बात कर रही हैं ना, जरा उनको वीडियो कॉल लगाइए।' मम्मी के वीडियो कॉल लगाने के बाद उनसे फोन लेकर नीशू अपने नानू से बोला, 'नानू मेरे लिए गदा लाए कि नहीं?' नानू बोले, 'लाया हूं भई, अपने बेस्ट फ्रेंड की बात कैसे नहीं मानता?' यह कहकर नानू ने बाजार से लाई प्लास्टिक और रबर से बनी एक छोटी सी गदा फोन कैमरे के सामने कर दी। उधर नीशू गदे को अच्छी तरह देखने के लिए नानू से बोल रहा था, 'थोड़ा नीचे करना नानू, अब थोड़ा ऊपर। थोड़ा सा लेफ्ट, अब राइट साइड में।' हर तरफ से देखकर संतुष्ट होने के बाद नीशू बोला, 'यार नानू आप गदा तो बड़ी अच्छी लाए हो। दो वीक के बाद मैं कानपुर आऊंगा तो आपके साथ गदा लेकर जूनियर भीम बनकर चलने की प्रेक्टिस करूंगा। ठीक है ना!' फिर कुछ सेकेंड रुककर वह बोला, 'अरे नानू, एक बात तो आपको बताना भूल ही गया। मैंने आज से ही दूघ पीना और फ्रूट्स खाना शुरू कर दिया है। अब तो मैं जूनियर भीम जैसा दिखूंगा न!'

नानू बोले, 'बिल्कुल दिखोगे, लेकिन यह हैबिट जब तक नहीं छोड़ोगे तब तक। अगर फिर से कभी दूध, फ्रूट्स के बजाय फास्ट फूड खाना शुरू कर दोगे तो सारी ताकत गायब हो जाएगी।' नीशू को नानू की बात समझ में आ गई थी। पंद्रह–बीस दिन बाद जब वह नानू के घर पहुंचा तो सबसे पहले नानू से अपनी गदा मांगी। जैसे ही गदा मिली उसने उसे अपने कंधे पर रखकर दांएं हाथ से पकड़ लिया। फिर थोड़ा अकड़कर चलना शुरू किया। नीशू सच में थोड़ा–थोड़ा जूनियर भीम जैसा ही नानू को दिख रहा था। नानू ने जब नीशू को देखते हुए थंब्स अप का इशारा किया तो नीशू ने भी स्माइल करते हुए अपने बाएं हाथ से थंब्स अप का इशारा करते हुए बोला, ' क्यों नानू, अब तो लगूंगा न जूनियर भीम जैसा!' नानू बोले, 'बिल्कुल!'

पता – हिंदी दैनिक हरिभूमि

नई दिल्ली

सुंदर अपना देश बनाओ

डॉ. कविता विकास

चित्र – टीना

अंतस में इक दीप जलाओ
तम को मन से दूर भगाओ
जीवन के उपवन में हरदम
प्रेम सरीखे फूल खिलाओ
सुख–दुख रचते जीवन–दर्शन
शिक्षा इनसे लेते जाओ
ख़त्म नहीं हो मिलना–जुलना
आओ, बैठो, हाथ मिलाओ
साज–सफ़ाई के बारे में
एक नहीं सौ बार बताओ
जंगल होंगे, जीवन होगा
पेड़ लगाओ, साँस बचाओ
भाई–चारा फैला कर तुम
सुंदर अपना देश बनाओ

पग–पग बिखरे शूलों पर ही
चलकर अपनी मंज़िल पाओ
प्रेम–अहिंसा अपना कर तुम
नफ़रत की दीवार गिराओ
अपनी कविताओं में 'कविता'
जन चेतन का मार्ग बता

पता– सेक्टर – 121, नोएडा, उत्तर प्रदेश

नटखट चंदू

वसंत जमशेदपुरी

चित्र – गुनगुन

नटखट चंदू बड़ी हठीली।
बातें करती बड़ी रसीली।।
तेल मसाला लेने जाती।
पेड़े खा वापस आ जाती।।
डाँट सुनाने माँ लगती है।
पैसे गिर गए यों कहती है।।
विद्यालय में धूम मचाती।
टीचर से नित पिट कर आती।।
जग जाहिर उसकी शैतानी।
सब को याद दिलाती नानी।।

पता– जमशेदपुर, झारखण्ड

गुरु की सीख

राम गोपाल व्यास

बहुत समय पहले की बात है किसी शहर में राम और मोहन एक ही ऑफिस में नौकरी करते थे। दोनो बचपन से ही घनिष्ठ मित्र रहे। नौकरी से के उपरान्त मोहन अपने गांव चला गया जहां उसके पास खेती की जमीन थी। वह वहां रह कर खेती का कार्य सम्हालने लगा। इध ार राम शहर में रहकर अपनी सादगी की जिन्दगी गुजारने लगा। सेवा निवृति के समय जो रकम मिली उसे संजोकर रखे था। कम खर्चे में वह परिवार के साथ सादगी का जीवन खुशी–खुशी जी रहा था। उसका सादगी का जीवन सुख से चल रहा था।

एक दिन गांव से उसका बचपन का दोस्त उससे मिलने को आया तो राम खुशी से फूला नहीं समा रहा था। उसने अपने मित्र की आवभगत की तथा परिवार की कुशल क्षेम पूछी। बातों ही बातों में उसने दोस्त से मजाकिया लहजे में पूछा क्या आज रास्ता भूल गये ? इतना सुनते ही मोहन की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। राम से यह देखा नहीं गया। उसने कहा, मोहन क्या बात है और तुम परेशान क्यों हो। मोहन ने कहा मैं परेशानियों के दौर से गुजर रहा हूं। बेटे ने गलत संगत पकड़ली और इस कारण काफी नुकसान हो गया। खेती की जमीन बेचनी पड़ गई। आय का कोई स्थाई साधन नहीं है तथा छोटा मोटा धन्धा कर परिवार पाल रहा हूं।

उसकी यह व्यथा सुन राम से नहीं रहा गया, बोला तू मेरे बचपन का दोस्त है बता मैं मेरी क्या मदद कर सकता हूं। मुझे जो पूंजी मिली उसे परिवार के लिए सुरक्षित रखते हुए सादगी से पूरा परिवार जी रहा है। मोहन ने कहा मैं दोस्त के नाते ही तेरे से मदद के लिए आया हूं। दो माह बाद बेटे की शादी तय है और इस कंगाली में मेरी इज्ज मिट्टी में मिल जायेगी। मुझे कुछ राशि उधारी दे दे तो मेरी इज्जत बच जायेगी। यह सुन राम ने न चाहते हुए भी लड़के की शादी के लिए उसको अच्छी राशि देते हुए कहा कि तुम

अभी अपना काम निकाल लो, मुझे तुमसे ब्याज नहीं लेना है। बस रकम वापस जल्दी लौटा देना। छः माह बाद मेरी बेटी की शादी है। मोहन इसके लिए विश्वास दिला कर चला गया।

उधर मोहन के बेटे की शादी बड़े धूमधाम से हुई लेकिन उसने राम को निमंत्रण तक नहीं दिया जिसका राम ने बुरा भी नहीं माना। सब कुछ सामान्य होने के बाद भी मोहन ने न तो राम को उधार राशि लौटाई और ना ही सम्पर्क किया। इधर ज्यों ज्यों समय गुजर रहा था, राम की बेटी की शादी का समय नजदीक आ रहा था तो राम की चिन्ता बढ़ना स्वाभाविक था। आखिर एक दिन वह मोहन के गांव पहुंच कर उससे मिला और राशि लौटाने की बात की तो वह दोस्त के अहसान को भूल गया और उधार ली राशि लौटाने से साफ इन्कार कर दिया। राम काफी गिड़गिड़ाया मगर उसकी एक नहीं सुनी गई और घर से बाहर कर दिया।

चित्र – किराडू

असहाय दुखी मन से वह वहां से शहर की ओर चल दिया। उसकी आशाओं के साथ दीप बुझ चुके थे। सोच रहा था क्या मैने अपने दोस्त की मदद कर बड़ा गुनाह किया। समाज में मेरी क्या इज्जत रहेगी। यह विचार करते हुए वह रास्ते से गुजर रहा था कि उसे बचपन के गुरूजी से भेट हो गई। उन्होंने राम को इस हालत में देख पूछा– अरे राम तेरी सादगी को मै सराहता हूं मगर तुमने अपनी ये क्या हालत बना रखी है। राम से रहा नहीं गया। वह फफक–फफक क रोने लगा और गुरूजी को सारा वृतान्त बताया। बातों को सुन गुरूजी भी आंसु नहीं रोक सके। उन्होंने नम आंखों से राम को एक सीख दी कि ''किसी के बुरे समय में उसकी मदद करना बहुत अच्छी बात है, मगर यह मदद पात्र व्यक्ति के लिए होनी चाहिए। कुपात्र की मदद न करने से पाप नहीं लगता।'' ऐसो की मदद कर अपना जीवन बर्बाद करना होता है। अतः भविष्य में ध्यान रखना मदद करे तो किसी पात्र की न की किसी अपात्र की।

पता –बृजलाल वैल, नया शहर, बीकानेर

बाल दिवस

वरुण देव

खेलना–कूदना, मौज मनाना,
बच्चो का संसार है।
पढ़ लिखकर सक्षम बनना,
हर बच्चे का अधिकार है।

इनकी प्रतिभा निखार कर,
भारत का गौरव बढाएगे।
नाम होगा देश का तब,
जब जीत का परचम फहराएंगे।

फूलों जैसे कोमल बच्चे,
मन के सच्चे, दिल के अच्छे।
पढ़–लिखकर ज्ञान बढ़ाना,
देश का नाम ऊँचा उठाना।

चित्र – कृतिका बाजोरिया

खेल–कूद में दिन बिताते,
शरारतों से सबको हँसाते।
हर बच्चे को मिले प्यार,
खुशहाल हो उनका संसार।

पता – कक्षा–10, गुरुकुल शिक्षा निकेतन

ठंडी की मौसम

अर्जुनसिंह के. राउलजी.

चित्र – कृतिका बाजोरिया

आई आई ठंडी की मौसम आई
शाल, स्वेटर और कंबल लाई
गरमा गरम मसाला चाय लाई
मेथीपाक और बादाम लाई
एक्स साइज़ का मौसम लाई
जल्दी जल्दी सुबह उठो
ना पापासे ना मम्मासे रूठो
जल्दी जल्दी दौड़ लगाओ
ना ज़्यादा सोचो ना बोलो
सिर्फ़ योगा में लगे रहो
आई आई ठंडी की मौसम आई
सेहत बनाने की मौसम आई

पता– 42, कृष्णा शान्ति सोसायटी, वडोदरा

समय का मूल्य

वीरेंद्र बहादुर सिंह

सुंदरपुर नाम का एक सुंदर गांव में राम और श्याम नाम के दो जुड़वां भाई रहते थे। मां–बाप ने दोनों भाई का गांव के स्कूल में दाखिला करा दिया था। दोनों भाई खुशी–खुशी स्कूल जाते थे।

शुरुआत में तो सब ठीक ठाक चला, लेकिन धीरे–धीरे राम और श्याम के स्वभाव में फर्क दिखाई देने लगा। राम को पढ़ना बहुत पसंद था। स्कूल से घर लौटने के बाद वह नियमित रूप से पाठ दोहराता, किताबें पढ़ता और अन्य गतिविधियों में भाग लेता। लेकिन श्याम का पढ़ाई से बिलकुल मन नहीं लगता था। वह अक्सर स्कूल से छुट्टियां करने लगा। ऐसे में श्याम को अपने जैसे शरारती दोस्त मिल गए। मां–बाप उसे समझाते, कभी डांटते, लेकिन श्याम किसी की नहीं सुनता था। धीरे–धीरे दोनों भाई सातवीं कक्षा में पहुंच गए। राम ने अच्छे अंक प्राप्त किए, जबकि श्याम मुश्किल से पास हुआ। आदतें अच्छी हों या बुरी, आसानी से नहीं छूटतीं। राम ने अनुशासन के साथ पढ़ाई जारी रखी, जबकि श्याम ने बुरे दोस्तों की संगति में बुरी आदतें अपना लीं। अब वह चोरी छुपे तंबाकू वाले पान मसाले खाता, सिगरेट पीता, मोबाइल में उलझा रहता और बेकार बातों में समय गंवाता।

दसवीं में राम ने जिले स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जबकि श्याम मुश्किल से 40 प्रतिशत अंक ला सका। ऐसा भी नहीं था कि श्याम को पढ़ाई की जगह किसी कला या खेल में दिलचस्पी थी, उसे तो बस समय बरबाद करने में ही मजा आता था। बारहवीं में पहुंच कर उसने आगे पढ़ाई करने से साफ इंकार कर दिया। मां–बाप ने बहुत समझाया, पर वह कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हुआ।

दूसरी ओर राम ने बारहवीं विज्ञान में बहुत अच्छे अंक ला कर एक प्रतिष्ठित मेडिकल कालेज में मेरिट से प्रवेश पाया।

समय अपनी चाल चलता गया। कुछ सालों बाद राम एक प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ बन गया, जबकि श्याम के पास न पढ़ाई थी, न कोई हुनर। छोटी–मोटी नौकरियां करने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं था। वह थोड़ी बहुत कमाई कर लेता, पर जीवन असंतोष भरा था। राम की प्रगति देख कर मां–बाप को बहुत गर्व होता, पर श्याम को देख कर वे दुखी हो जाते।

चित्र – सौरभ स्वामी

एक दिन ऐसा आया कि श्याम को अपने ऊपर ही शर्म आने लगी। उसे सच्चाई समझ में आ गई। उसने सोचा कि काश! उसने भी विद्यार्थी जीवन में मेहनत की होती, अनुशासन में जीवन जिया होता।

एक दिन वह मां–बाप और भाई के सामने रो पड़ा। उसने दिल से सब से माफी मांगी। उसे सच्चा पछतावा हो रहा था।

पिता ने कहा, "श्याम बेटा, देर से ही सही, लेकिन तुझे सच्चाई समझ में आ तो गई। जागने वाले के लिए हर समय सवेरा होता है। तू अभी जवान है, तेरे सामने पूरी जिंदगी पड़ी है। तेरे अंदर भी अपार शक्तियां हैं। अगर तू ठान ले तो तू भी सुंदर जीवन जी सकता है।"

राम ने कहा, "श्याम, मुझे पता है कि तू व्यवसाय (बिजनेस) करना चाहता है। तू उसी दिशा में आगे बढ़। मैं हमेशा तेरे साथ रहूंगा।"

मां बोलीं, "बेटा, एक बात कभी मत भूलना। मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। और हां, पर मेहनत सही दिशा में होनी चाहिए। अगर तू समय को संभाल लेगा तो समय भी तुझे संभालेगा।"

श्याम ने कहा, "हां मां, अब मुझे अपनी गलतियां समझ में आ गई हैं। मैं वे गलतियां अब कभी नहीं दोहराऊंगा।"

तो दोस्तों, आओ हम सब भी यह पक्का निश्चय करें कि हम जीवन को सही दिशा में ले जाएंगे और सही कार्यों में निरंतर परिश्रम करेंगे...

पता– जेड–436ए, सेक्टर–12,
नोएडा–201301 (उ.प्र.)

बच्चों का कोना

रजनी आचार्य

गणेश शर्मा

राधिका जोशी

अनुष्का

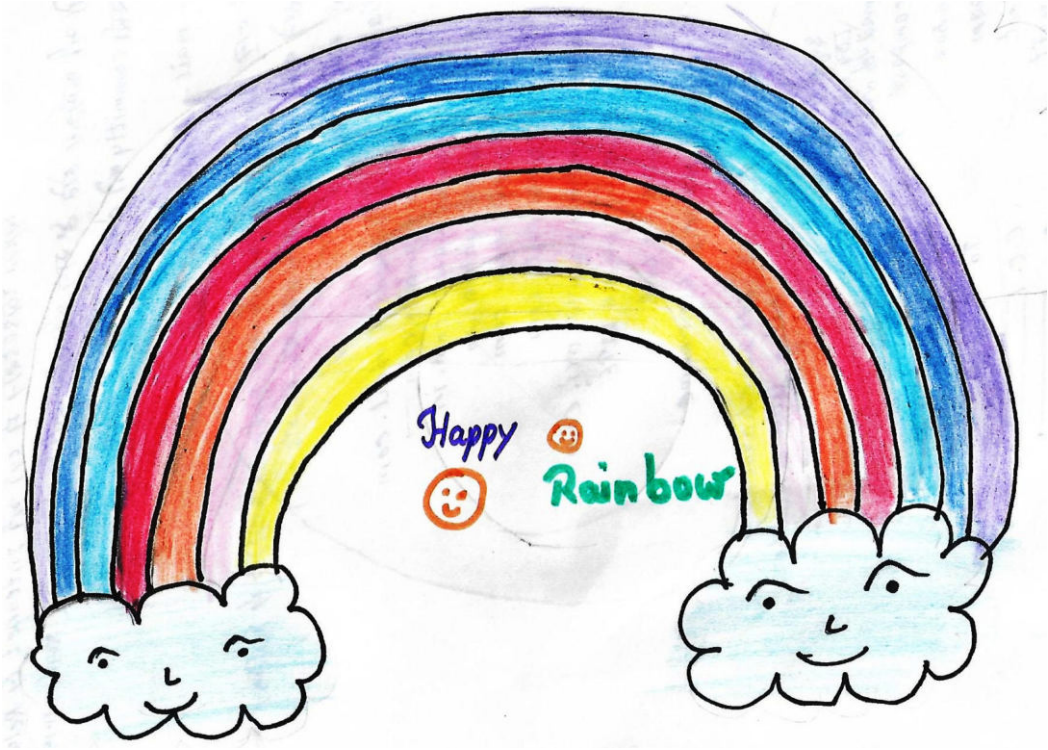

सृष्टि पुरोहित

हिमांशु पड़िहार

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

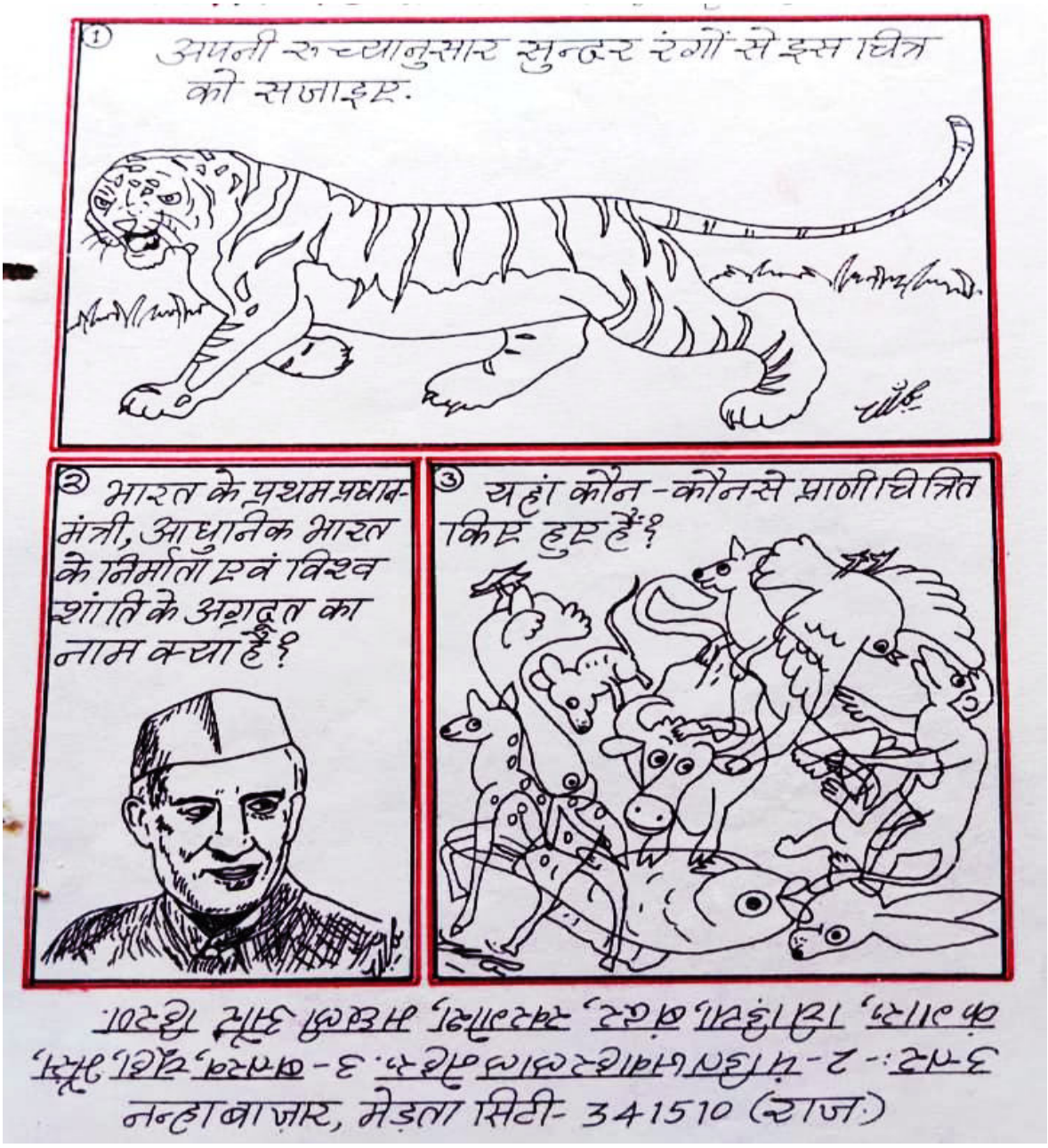

दुनिया के देश

चाड

संजय पुरोहित

हेलो दोस्तों! कैसे हो आप। उम्मीद करते हैं कि आप स्वस्थ होगे और मस्त भी होंगे साथ ही पढ़ाई में व्यस्त भी होंगे। अभी तो फेस्टिवल सीजन चल रहा है। दीपावली पर आपने खूब मस्ती की होगी। नये कपड़े, खूब सारी मिठाईयां खायी होंगी और आतिशबाजी भी की होगी। हमारे फेस्टिवल हमें अपनी कल्चर से जोड़े रखते हैं। तेजी से बदलती दुनिया में हमारा प्यार देश भारत ही ऐसा देश है जिसमें कल्चर और ट्रेडिशन को इतनी मुहब्बत से मनाते हैं। हमें यकिन है कि आपने फेस्टिवल को केवल मजे के लिये नहीं बल्कि इसके साथ ही बड़ों के प्रति आदर और छोटों के प्रति प्यार की भावना भी रखी होगी। तो फेस्टिव सीजन में भी खेल खेल में देशों की जानकारी देने के हमारे प्रयास के तहत हम आपको सैर कराते हैं दुनिया भर के अलग अलग स्थानों पर बसे देशों की। तो सैर करने की सीरीज़ में आज हम आपको कुछ अलग हट कर ऐसे देश के बारे में बताते हैं जिसे 'डेड हार्ट ऑफ अफ्रीका' कहा जाता है। ऐसा इसलिये कि यह वीरान और निर्जन क्षेत्र में स्थित हैं यह देश है—चाड। चाड अफ्रीका महाद्वीप का एक लैण्ड लॉक्ड देश है। वो इसलिये कि यह 'सहारा डेजर्ट' और 'सहेल' रीजन में स्थित है। यह नॉर्थ मिडिल अफ्रीका में स्थित है। इसके नॉर्थ में सहारा रेगिस्तान है। सेंटर में 'सेमी एरिड सहेल' रीजन है। साउथ में

साभार – www.kids.nationalgeographic.com

सवाना है। चाड में पानी का सबसे बड़ा स्रोत चाड नदी है। कभी चाड नदी अफ्रीका की सबसे बड़ी झीलों में से एक थी लेकिन अब यह सिकुड़ गयी है। चाड विभिन्न जनजातियों और अपनी विविध संस्कृति और भौगोलिक विशेषताओं के लिये भी पहचान रखता है।

प्राचीन समय में चाड क्षेत्र में कई पावरफुल

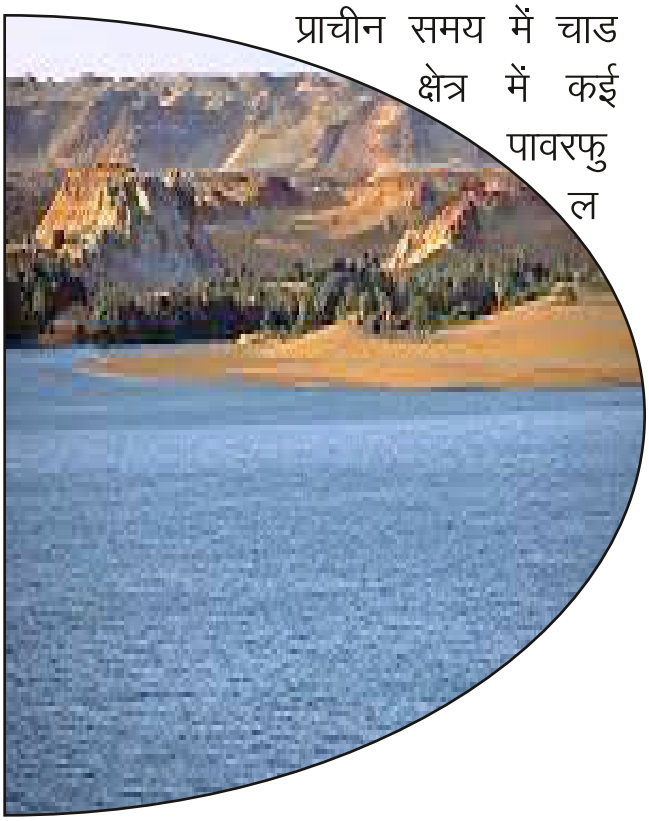

साभार – www.nationsonline.org

एम्पायर थे। जैसे 'कनेम–बोर्नू' एम्पायर, 'बागिरमी' और 'वाडाई' एम्पायर। 19वीं सेंचुरी में फ्रांस के कोलोनाईजर्स ने इस पर अधिकार कर लिया और चाड को 'फ्रेंच इक्वेटोरियल अफ्रीका' में शामिल कर लिया। 11 अगस्त 1960 को चाड को फ्रांस से आजादी मिली। इसी दिन चाड अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। चाड की सीमा छह देशों से मिलती है। नॉर्थ में लीबिया, ईस्ट में सूडान, साउथ में मध्य अफ्रीकी रिपब्लिक, साउथ वेस्ट में कैमरून, साउथ वेस्ट में नाईजीरिया और वेस्ट में नाइजर स्थित है। चाड में भी अस्थिरता रहती है और चाड के आसपास के सभी देशो में संघर्ष चलता ही रहता है। चाड में राष्ट्रपति ही 'हैड ऑफ द स्टेट' होता है। सरकार में हमारे देश की तरह ही कार्य पालिका, विधायिका और न्याय पालिका होती है। चाड की राजधानी 'न जामेना' है जो कि एक सांस्कृतिक केन्द्र भी है। चाड पॉलिटिकल अस्थिरता वाला देश है। यहां पर तख्ता पलट भी होते रहते हैं। चाड में वन्य जीवों की बहुतायत है। हाथी, शेर, चीता, जिराफ, दरियाई घोड़ा, मगरमच्छ जैसे वन्य व जल प्राणी पाये जाते हैं। यहां का 'जाकिया नेशनल पार्क', 'आओक नेशनल पार्क' और यूनेस्को धरोहर 'एन्नेडी नेचुरल एण्ड कल्चरल रिजर्व' प्रसिद्ध है। इनके अलावा एन्नेडी पर्वत नेचुरल रॉक्स, ओउनिंगा झील, बागिरमी, वाडाई के किले और गुफा चित्रों पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहते हैं। एन्नेडी पर्वत के प्राचीन गुफा चित्र तो हजारों साल पुराने हैं और उनमें मानव सभ्यता की प्राचीन झलक नजर आती है

चाड में पैदा होने वाली मुख्य फसलें बाजरा, ज्वार, कपास, मूंगफली,

गन्ना और चावल है। कॉटन व फूड प्रोसेसिंग, पेट्रोलियम रिफाईनिंग, कपड़ा, साबुन, सिगरेट और सीमेंट उत्पादन यहां के मुख्य उद्योग हैं। चाड कच्चे तेल यानी क्रूड ऑयल को सबसे ज्यादा एक्सपोर्ट करता है। इनके अलावा कपास, पशु उत्पाद, तिलहन और मूंगफली का भी एक्सपोर्ट बड़ी संख्या में करता है। इन सबके बावजूद चाड एक निर्धन देश है। चाड की साक्षरता भी विश्व मे सबसे कम देशो में से एक है। चाड की करंसी का नाम 'सेंट्रल अफ्रीकन फ्रेंक' है। जिसे 'सीएफए' भी कहा जाता है। चाड की ऑफिसियल भाषा फ्रेंच है। जबकि अरबी और सारा, चाडियन अरेबिक भाषाएं भी बोली जाती है।

चाड के निवासियों में पचपन प्रतिशत इस्लाम को मानने वाले और लगभग चाली प्रतिशत ईसाई धर्म को मानते हैं। चाड में लगभग दो सौ से अधिक जातीय समूह और बोलियां हैं। चाड का झण्डा तीन खड़ी लाईन्स का होता है जिसमें नीला रंग आकाश, आशा और दक्षिणी चाड की झीलों व नदियों का प्रतीक होता है। पीली धारी रेगिस्तान और सूरज की गर्मी को दर्शाता है। और लाल रंग एकता, प्रगति और स्वतंत्रता के लिये संघर्ष को व्यक्त करता है। रोमानिया के झंडे से बहुत मिलता जुलता है जिसके कारण कई बार इन्टरनेशनल स्तर पर भी भ्रम हो जाता है। चाड का कोई नेशनल एनीमल नहीं है लेकिन अफ्रीकी हाथी और अफ्रीकी लॉयन को देश की नेचुरल हैरिटेज और पहचान के रूप में देखा जाता है। चाड का ट्रेडिशनल और पाप्युलर व्यंजन 'बुइयी' है। यह एक प्रकार का मीठा दलिया होता है, जो बाजरे या ज्वारसे बनाया जाता है। इसमें दूध, चीनी व मसाले डाले जाते हैं।

तो ये थी चाड देश की सैर। आपको पसंद आई होगी। ये छोटी छोटी जानकारियां आपको अपने जीवन में आगे बहुत काम में आने वाली है। इसलिये इन्हे पढ़ना न भूलियेगा। और हां, आपको हमारा ये प्रयास कैसा लगता है, इसके बारे मे हमें जरूर बताना। अगले अंक में चलेंगे एक और देश की यात्रा को। तब तक के लिये बाय–बाय।

पता – समीप सूरसागर, बीकानेर।

समझ आ गई बात

आरती आस्था

निष्ठा सात साल की प्यारी सी बच्ची है। प्यारी सी इसलिए कि एक तो उसकी आवाज बेहद सुरीली है, उस पर वह इतनी मीठी–मीठी बातें करती है कि रसगुल्ले की मिठास भी उसकी बातों के सामने फीकी लगने लगती है। उसके चेहरे पर हमेशा रहने वाली मुस्कान उसके प्यारेपन को और बढ़ा देती है। जब भी घर पर कोई मेहमान आता, वह मम्मी द्वारा बनाई गई हर डिश उन्हें बहुत प्यार–मनुहार से खिलाती। जब पापा के कोई फ्रेंड आते तो कहती, 'भाई साहब अंकल... भाई साहब अंकल.. ये वाली स्वीट टेस्ट करिए। बहुत टेस्टी है। सच्ची में आप उंगली चाटते रह जाएंगे।' जब मम्मी की कोई फ्रेंड आतीं तो कहती, 'दीदी आंटी... दीदी आंटी... मेरी मम्मा बेकरी डिशेज बहुत यम्मी बनाती हैं। आप ये वाला बिस्कुट खाकर तो देखिए। आप दोबारा मांगेंगी। सच्ची कह रही हूं। मेरी मम्मा के हाथों में जादू है।' निष्ठा ऐसा इसलिए कहती क्योंकि वह सुनती कि पापा अपने दोस्तों को भाई साहब कहते हैं और उससे अंकल कहने के लिए कहते हैं, तो निष्ठा दोनों को मिलाकर–भाई साहब अंकल पुकारती। इसी तरह वह मम्मा की सहेलियों को दीदी आंटी कहती है।

चित्र –आयुशी

निष्ठा के इतने प्यारेपन के बावजूद उसकी क्लासमेट्स उसे उसके सांवलेपन के कारण उसका मजाक उड़ाते हैं। उसे बहुत बुरा लगता है। अपने सांवलेपन को लेकर वह वैसे ही बहुत परेशान रहती है, क्योंकि जब कभी निष्ठा दुलराते हुए, अपनी मां को 'मम्मा–मम्मा' बुलाती तो

उसका भाई वरुण उसको चिढ़ाते हुए कहता, 'वह मेरी मम्मा है। तुम्हें तो मम्मा रास्ते से उठाकर लाई थीं, तभी तो मैं गोरा और तुम काली हो!'

एक बार वह अपने पापा से पूछ भी चुकी थी, 'पापा मैं भैया की तरह गोरी क्यों नहीं हूं ? मुझे गोरा होना है।' तब पापा ने उसे यह कहकर दिलासा दिलाया 'आप थोड़ी बड़ी हो जाओ तब आपको कोरिया ले चलेंगे। वहां काले लोग गोरे हो जाते हैं।' यह सुनने के बाद निष्ठा अपने बड़े और गोरे होने का इंतजार करने लगी थी। लेकिन एक रोज कुछ ऐसा हुआ कि सारा मामला ही पलट गया। दरअसल, उस दिन उसकी क्लासमेट्स उसे काली–काली कहकर चिढ़ा रही थीं।

क्लासमेट्स के काली–काली कहने पर निष्ठा नाराज हो गई। फिर उसने अपनी गुस्से से भरी आंखें दिखाकर क्लासमेट्स को डरा दिया, साथ ही मुक्का दिखाकर भगाया और एक क्लासमेट का तो उसने टिफिन ही फिनिश कर दिया। इस पर निष्ठा की क्लासमेट्स क्लास टीचर से उसकी शिकायत करने पहुंच गईं। चूंकि टीचर मैम निष्ठा को अच्छे से जानती थीं इसलिए वह समझ गईं कि पहले इन्हीं बच्चियों ने कोई न कोई शैतानी की होगी, तभी निष्ठा ने गुस्से में आकर अपने अंदाज में उन्हें ऐसे उत्तर दिया होगा। इसलिए उन्होंने उन बच्चियों को यह कहकर वापस भेज दिया, 'आप लोग जाइए मैं निष्ठा से बात करती हूं।'

उस दिन जब निष्ठा स्कूल से घर लौटी तो वह बिल्कुल चुप थी। उसको चुप देखकर मम्मी समझ गईं कि आज निष्ठा का मूड कुछ अपसेट है क्योंकि रोज तो वह घर का गेट खोलते ही स्कूल की छोटी से छोटी बात पूरे विस्तार से बताना शुरू कर देती थी। उसके बाद ही वह अपनी ड्रेस चेंज करती और हाथ मुंह धोती थी। तब कहीं जाकर उसके दूसरे काम शुरू होते थे। लेकिन उस दिन जब ऐसा कुछ नहीं हुआ तो मम्मी ने पूछा, 'क्या बात है निष्ठा ! तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ?' लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद जब मम्मा निष्ठा के लिए उसकी फेवरेट खीर लेकर आईं तो वह बोली, 'मम्मा, आप जानती हैं कि मुझे खीर बहुत पसंद है लेकिन इसे खाने का आज मेरा बिल्कुल मन नहीं है।' इस पर मम्मा बोलीं, 'यही तो मैं इतनी देर से जानना चाह रही हूं कि इतने सुंदर मन वाली मेरी बेटू आज इतनी अनमनी क्यों है?'

इस पर निष्ठा बोली, 'मन के सुंदर होने से क्या होता है मम्मा, मेरे शरीर का रंग तो काला है, मैं अच्छी नहीं बहुत बुरी दिखती हूं।'

'मेरी निष्ठा और बुरी! जिसकी तबियत खराब होगी उसी ने मेरी निष्ठा को बुरा कहा होगा। जानती हो बेटू, दुनिया का हर रंग सुंदर होता है। हर रंग का अपना महत्व होता है। सोचो अगर बगीचे में केवल सफेद रंग के ही फूल होते तो क्या बगीचा उतना सुंदर दिखता, जितना कि लाल, पीले, नीले, सफेद, नारंगी और गुलाबी रंगों के फूलों वाला बगीचा दिखता है! तुम उन लोगों की बातों पर ध्यान क्यों देती हो, जो कहते हैं कि काला रंग खराब होता है ? रात भी तो काली होती है लेकिन रात में ही तो कितना खूबसूरत चांद निकलता है! रात की ही चांदनी में तो हरसिंगार, रात रानी, चमेली, बेला और ब्रह्म कमल जैसे प्यारे फूल खिलते हैं। जो न केवल आंखों को बल्कि मन को भी सुकून पहुंचाते हैं। इतना ही नहीं ब्लैक बोर्ड के काले रंग पर लिखे अक्षरों, शब्दों और अंकों से ही हमने इतने सारे विषयों का ज्ञान प्राप्त किया है।' इतना कहकर मम्मा कुछ देर के लिए शांत हुईं ताकि देख सकें कि निष्ठा के मन में कोई सवाल तो नहीं उठ रहा है। लेकिन जब मम्मा ने देखा कि उनके समझाने का निष्ठा के मन पर सही असर हो रहा है। उसके चेहरे पर उदासी के कालेपन की जगह मुस्कान का उजाला फैल रहा है तो यह देखकर मम्मा भी मुस्कुरा दीं।

चित्र – दिव्यांशी शर्मा

मुस्कुराते हुए निष्ठा के सिर पर हाथ फेरते हुए मम्मा ने कहा, 'तुम्हारे प्यारे कान्हाजी भी तो सांवले हैं। लेकिन उन्होंने अपनी मीठी बोली, मुस्कान और प्यारे–नटखट व्यवहार से सभी का दिल जीत लिया था न!'

इस पर निष्ठा ने मुस्कुराते हुए हामी में सिर हिलाया फिर बोली, 'अब मैं भी अपने व्यवहार से सभी का दिल जीतूंगी, चिढ़ाने पर भी किसी से गुस्सा नहीं होऊंगी, तो सब मुझे कान्हा जितना ही प्यार करेंगे। और मुझे गोरे होने के लिए पापा के साथ कोरिया भी नहीं जाना पड़ेगा।'

यह सुनकर मम्मी ने निष्ठा को प्यार की झप्पी दे दी।

पता – बिठूर रोड, कल्याणपुर, कानपुर

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों कुछ नवीन जानकारियां आपके लिए फिर लेकर आया हूं। खगोल विज्ञान अंतहीन है। इसमें बहुत ही रोचक एवं विस्मय घटनाएं होती रहती है। जिसमें से मुख्य घटनाओं की यहां संक्षिप्त जानकारी आपके साथ साझा कर रहा हूं।

इस माह आपको आसमान में दो बार उल्का पिण्डों को देखने का मौका मिलेगा। दिनांक 4 एवं 5 नवंबर को टॉरिड्स उल्का बौछार हमें आसमान में देखने को मिलेगी। टॉरिड्स एक लंबे समय तक चलने वाली छोटी उल्का बौछार है जो प्रति घंटे केवल 5–10 उल्काएं पैदा करती है। यह इस मायने में असामान्य है कि इसमें दो अलग–अलग धाराएँ शामिल हैं। पहला क्षुद्रग्रह 2004 टीजी10 द्वारा छोड़े गए धूल के कणों से उत्पन्न हुआ है। दूसरी धारा धूमकेतु 2पी एनके द्वारा छोड़े गए मलबे से उत्पन्न हुई है। वर्षा प्रतिवर्ष 7 सितंबर से 10 दिसंबर तक चलती है। इस वर्ष यह 4 नवंबर की रात को चरम पर होती है। दुर्भाग्य से पूर्णिमा के चंद्रमा की चमक इस वर्ष अधिकांश उल्काओं को छिपा देगी। फिर भी उल्काओं को देखने का सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद शहर की रोशनी से दूर किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं वृषभ राशि से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

साभार www.nhm.ac.uk

इसी प्रकार 17 एवं 18 नवम्बर को भी लियोनिड्स उल्का बौछार होगी। लियोनिड्स एक औसत बौछार है, जो अपने चरम पर प्रति घंटे 15 उल्काएं पैदा करती है। यह बौछार इस मायने में अनोखी है कि इसमें लगभग हर 33

साल में एक चक्रवाती शिखर होता है जहां प्रति घंटे सैकड़ों उल्काएं देखी जा सकती हैं। इनमें से आखिरी घटना 2001 में हुई थी। लियोनिड्स का निर्माण धूमकेतु टेम्पेल–टटल द्वारा छोड़े गए धूल के कणों से हुआ है, जिसे 1865 में खोजा गया था। शॉवर हर साल 6–30 नवंबर तक चलता है। इस वर्ष यह 17 तारीख की रात और 18 तारीख की सुबह चरम पर है। लियोनिड्स के लिए यह एक उत्कृष्ट वर्ष होना चाहिए। पतला, अर्धचंद्राकार चंद्रमा कोई बड़ी समस्या नहीं होगी और एक शानदार शो के लिए आसमान काफी अंधेरा रहेगा। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं सिंह राशि से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

दिनांक 5 नवंबर को पूर्णिमा के दिन सुपरमून को हम देख सकते है। चंद्रमा पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा क्योंकि सूर्य और उसका चेहरा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। यह चरण 13:21 यूटीसी पर होता है। इस पूर्णिमा को शुरुआती मूल अमेरिकी जनजातियों द्वारा बीवर मून के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह दलदलों और नदियों के जमने से पहले बीवर जाल लगाने का साल का समय था। इसे फ्रॉस्टी मून और डार्क मून के नाम से भी जाना जाता है। यह 2025 के तीन सुपरमूनों में से दूसरा भी है। चंद्रमा पृथ्वी के सबसे करीब होगा और सामान्य से थोड़ा बड़ा और चमकीला दिख सकता है।

दिनांक 20 नवंबर को अमावस्या होगी। चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। यह चरण 06:49 यूटीसी पर होता है। आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है।

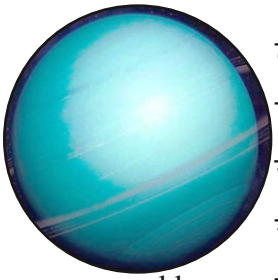

साभार www.bbc.com

दिनांक 21 नवंबर को विपक्ष में यूरेनस ग्रह को देखा जा सकता है। यूरेनस नीला–हरे रंग का ग्रह होता है। इस समय यह पृथ्वी के सबसे करीब होगा और इसका चेहरा सूर्य से पूरी तरह प्रकाशित होगा। यह वर्ष के किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक चमकीला होगा और पूरी रात दिखाई देगा। यूरेनस को देखने का यह सबसे अच्छा समय है। अपनी दूरी के कारण, यह सबसे शक्तिशाली दूरबीनों को छोड़कर सभी में केवल एक छोटे नीले–हरे बिंदु के रूप में दिखाई देगा।

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते है। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - प्रातः 11:00 से सायं 6:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com